Date: 1/2/2022

वंशानुक्रम का अर्थ एवं परिभाषा :-

बालक को जो शारीरिक और मानसिक गुण अपने माता पिता और अन्य पूर्वजों से गर्भाधान के समय वीर्य और रजकणों के माध्यम से प्राप्त होते है। उन्हें ही आनुवंशिकता या वंश-परम्परा या वंशानुक्रम कहा जाता है। जीवशास्त्र के अनुसार "निषेचित अण्ड में सम्भवतः उपस्थित विशिष्ट गुणों का योग ही वंशानुक्रम है।

वुडवर्थ :->

"वंशानुक्रम के अन्तर्गत उन सभी तत्वों का समावेश है, जो व्यक्ति के भीतर गर्भाधान के समय जीवन आरम्भ करते समय विद्यमान होते है।"

रुथ बेडिक्ट :->

"वंशानुक्रम माता-पिता से सन्तानों में विशिष्ट गुणों का संक्रमण है,

इस प्रकार वंशानुक्रम से हमारा तात्पर्य उस क्रिया से है। जिससे पृथ्वी पर विभिन्न जीवन अपने पूर्वजो के सदृश हुआ करते है। यह क्रिया इतनी अविरल गति तथा एक क्रम से चला करती है कि बिल्ली से बिल्ली, शेर से शेर और मनुष्य से मनुष्य पैदा होता है। आनुवंशिकता माता-पिता से सन्तानों को प्राप्त होने वाले गुण है।

II

Date: / /

वंशानुक्रम का बालक के विकास की दृष्टि से महत्त्व

→ शारीरिक गठन पर प्रभाव →

वंशानुक्रम बालक के शारीरिक विकास को प्रभावित करता है। कार्ल पियर्सन का कहना है कि "यदि माता-पिता कद में लम्बे तथा ठिगने होते है तो सन्तान भी लम्बा तथा ठिगने होते है" अपवादों को छोड़ देने पर पियर्सन का मत प्रत्येक बालक के विकास से सम्बन्ध में यह सत्य है।

2- मूल प्रवृत्तियों का अभाव, → थार्नडाइक के अनुसार →

"बालक की मूल प्रवृत्तियों का मुख्य कारण उनका वंशानुक्रम है,"

"बालक का मूल प्रकृत्यात्मक व्यवहार वंशानुक्रम के कारण ही होता है।

मैक-डूगल ने 'वंश से प्राप्त मौलिक प्रेरणाओं' को ही मूल प्रवृत्तियाँ कहा है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया